International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 3, Issue 6, Nov.-Dec., 2023, pp: 631-635 www.ijhssm.org

याज्ञवल्क्यस्मृति में सांख्य तत्त्वानुशीलन

-

- डॉ. अमृता

Date of Submission: 15-12-2023 Date of Acceptance: 30-12-2023

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में याज्ञवल्क्य स्मृति में निरूपित सांख्य दर्शन के तत्त्वों का अनुशीलन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किया गया है। सांख्य दर्शन कपिल मुनि द्वारा प्रणित एक अद्भुत दर्शन शाखा है । विद्वज्जनों की मान्यता है कि सांख्य का सर्वप्रथम उल्लेख श्वेताश्वतर उपनिषद् में पाया जाता है। महाभारत और पुराणों में तो सांख्य दर्शन का संपूर्ण प्रतिबिम्ब ही लक्षित होता है।

इसके अनुसार प्रकृति एवं पुरुष के संयोग से बुद्धि एवं अहंकार की उत्पत्ति होती है फिर क्रमशः सत्व, रज, तम गुण, पंच ज्ञानेन्द्रिया, पंच कर्मेंद्रियां, उभयात्मकेन्द्रिय तथा पंचमहाभूतों की उत्पत्ति होती है। आज हम लगभग इन सभी तत्वों को किसी न किसी रूप में समझ सकते हैं तथा अनुभव भी कर सकते हैं । याज्ञवल्क्यस्मृति के तृतीय अध्याय में यतिधर्मप्रकरण के अन्तर्गत इन तत्त्वों का विशद निरूपण मिलता है।

की वर्ड्स -

प्रकृति-पुरुष, त्रिविध दुःख, पंचमहाभूत, त्रिगुणात्मक जगत,षोडश विकार, पञ्चतन्मात्राएं, सांख्य तत्त्व, महत् तत्त्व, प्रमाण , क्षेत्रज्ञ ।

याज्ञवल्क्य स्मृति में सांख्य दर्शन के तत्त्वों का विमर्श करने से पहले हमें दर्शन क्या है ? और उसके अन्तर्गत सांख्य दर्शन के तत्त्वों क्या है उनको जानना अनिवार्य है। अतः सर्व प्रथम हम सांख्य दर्शन के विषय में प्रकाश डालेंगे और तदन्तर याज्ञवल्क्य स्मृति में प्रयुक्त सांख्य तत्त्वों का अनुशीलन करेंगे।

दर्शन शास्त्र व सांख्य दर्शन

प्राणिमात्र की प्रवृत्ति सुख की ओर ही दिखायी देती है। कोई प्राणी क्षणमात्र के लिए भी दुःख नहीं चाहता है। कुछ लोग तो दुःखों से उद्विग्न होकर आत्महत्या तक में प्रवृत्त हो जाते हैं, वह प्रवृत्ति भी सुखप्राप्ति की लालसा से ही होती है। इसकी पुष्टि महाभारत के इस श्लोक में होती है **"दुःख दुद्विजते लोक सर्वस्व सुखमीप्सितम इति"** किन्तु सुख क्या है ? इस प्रश्न का समाधान साधारण मानवसमाज नहीं करत पाता; वह तो मोह माया वश इन्द्रियों की तृप्ति को ही परम सुख मानता है। ऐहिक सुखोपयोग दुःख से पूर्ण होने के कारण विषमिश्रित मधु के समान है। अतः उसे त्यागकर ऐकान्तिक एवं आत्यन्तिक सुख की खोज स्वयं प्रयत्नशील रहकर दुःखसागर में निमग्न हुए साधारण लोगों के उध्दारार्थ यथार्थ को आत्मसात् कराना ही दर्शन है।

भारतीय दर्शनों में बारह दर्शन अत्यन्त प्रसिध्द है। उनमें छह वैदिक दर्शन और छह अवैदिक दर्शन है। उन छह वैदिक दर्शनों में ही एक सांख्य दर्शन है, जिसके रचयिता परमर्षि कपिलमुनि है।

भारतीय दर्शन में सांख्य दर्शन का अपना महत्वपूर्ण स्थान रहा है। महाभारतकार के शब्दो में

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 3, Issue 6, Nov.-Dec., 2023, pp: 631-635 www.ijhssm.org

"ज्ञान च लोके यदिहास्ति किंचित सांख्यागतं तच्च महन्महात्मन"

इसी प्रकार महाभारत के शान्तिपर्व के (३१५-३२३) नो अध्यायों में याज्ञवल्क्य और दैवराति जनक के संवाद का उल्लेख है। इस संवाद में अव्यक्त महान अहंकार और पांच सूक्ष्म भूत ये आठ प्रकृति
है, इसमें महत् आदि सार व्यक्त है। एकादश इन्द्रिय और पांच महाभूत ये सोलह विकार है त्रिगुणात्मक जगत् प्रकृति का परिणाम आदि का वर्णन है।
महाकवि कालिदास के अनुसार

"विकारं खलु परमार्थतोऽज्ञात्वाऽनारंभः प्रतीकारस्य – अभिज्ञानशाकुन्तलम् अंक. ३

अर्थात् अनपेक्षित वस्तु के वास्तविक स्वरूप को बिना जाने उसका प्रतीकार करना संभव नहीं। अतः ईश्वरकृष्ण ने दुःख का आध्यात्मिक आधिभौतिक और आदि दैविक रूप से वर्गीकरण किया है दुःखत्रय के रूप में।

1) आध्यात्मिक दुःख वह है, जो वात, पित्त कफ इन तीनों धातुओं की विषमता और काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर के कारण होता है।

2) आधिभौतिक दुःख वह है, जो मनुष्य पशु-पक्षी सर्पादि प्राणियों के कारण होता है।

3) आधिदैविक दुःख वह है, जो यक्ष, राक्षस, ग्रहों के कारण होता है। इन तीनों प्रकार के दुःखों को सदैव और अवश्य ही रोकने के लिए सांख्यशास्त्रीय तत्वों का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

दुःखत्रयाभिघाताज् जिज्ञासा तद्घातकें हेतौ।
दृष्टे साऽपार्था
चेन्नैकान्तात्यन्ततोऽभावात् ।। - सांख्यकारिका १

अब यहां स्थूलदर्शी लोगों में यह जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि त्रिविध दुःखों में से कुछ दुःखों को लौकिक उपायों से दूर किया जा सकता है और जो ताप लौकिक उपाय से दूर नहीं किये जा सकते उनको वैदिक उपाय यज्ञ हवनादि से दूर किया जा सकता है। परन्तु लौकिक उपाय से दूर किया गया ताप (ज्वरादि) पुनः प्राप्त होता है और वैदिक अनुष्ठान से किये गये तापनिवृत्ति में जीवहिंसा अपवित्रता आदि सातिशयता दोष उत्पन्न होने से वे सदा के लिए दुःखनिवृत्ति कराने में समर्थ नहीं है. अतः सर्वदा के लिए दुःखों को दूर करने का कोई एकमात्र उपाय है तो सांख्यतत्व का विशुध्द और निरतिशयफलदाय ज्ञान प्राप्ति ।

इतना ज्ञान होने पे जिज्ञासा है कि सांख्य के वे कौन से तत्व हैं जिसका ज्ञान होने से निःश्रेयस् की प्राप्ति होती है। तो इसका समाधान करते हुए शास्त्रकार बताते हैं कि व्यक्ततत्व अत्यक्ततत्व और ज्ञ तत्व के ज्ञान प्राप्त करने से नि-श्रेयस की प्राप्ति होती है। संक्षेप में सांख्यशास्त्र के तत्वों का चार प्रकार से वर्गीकरण किया गया है।

1. प्रकृति २. प्रकृति विकृति ३. विकृति ४. प्रकृति विकृति रहित

मूलप्रकृतिर विकृतिमर्हद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न
विकृति पुरुष ।। - सांख्यकारिका - ३

उनमें परिणामशून्य अर्थात जो स्वयं किसी का परिणाम नहीं है ऐसी प्रकृति, जिसे प्रधान के नाम से भी जाना जाता है, वह सम्पूर्ण सृष्टि का मूल है। महतत्त्वादि विकार कार्य उसी से पैदा हुए है। महत्तत्व (महान-महत) का दूसरा नाम बुध्दि है। वह महत्तत्व या बुध्दि, मूल प्रकृति का विकार और अहंकार की प्रकृति है, अर्थात वह महत्तत्व स्वंय तो मूलप्रकृति से पैदा होता है, इसलिए विकृति और अहंकार को वह स्वयं पैदा करता है अतः प्रकृति भी कहलाता है। उसी तरह अहंकार स्वयं महत्तत्व से पैदा होने के कारण विकृति और पञ्चतन्मात्राओं तथा इन्द्रियों को पैदा करने के कारण प्रकृति कहलाता है।

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 3, Issue 6, Nov.-Dec., 2023, pp: 631-635 www.ijhssm.org

पञ्चतन्मात्रायें अहंकार से पैदा होने के कारण अहंकार की विकृति है और स्वयं पंचमहाभूतों को पैदा करती है इसलिए उनकी (पंचमहाभूतों की) वे (पंचतन्मात्राएं) प्रकृति कहलाती है। पंचमहाभूत और एकादाश इन्द्रियों से कोई पेदा नहीं होता इसलिए उन दोनों की कोई विकृति न होकर वे स्वंय ही विकृति है।

चेतन (पुरुष) न किसी से पैदा होता है और न किसी को पैदा करता है इसलिए वह (पुरुष) प्रकृति - विकृतिरूप धर्म से शून्य है अर्थात वह न किसी की प्रकृति (कारण) है और न किसी की विकृति (कार्य) है।

इस रीति से उक्त पच्चीस तत्व ही सांख्यशास्त्र के प्रतिपाद्य विषय है। वे पच्चीस तत्व ये है :-

१. प्रकृति २. पुरुष ३. महततत्व ४. अहंकार ५. मन ६. श्रोत ७. त्वक् ८. चक्षु ९. रसना १०. घ्राण ११. वाक् १२. पाणि १३. पाद १४. वायु १५. उपस्थ १६. शब्द १७. स्पर्श १८.रूप १९. रस २०. गन्ध २१. पृथ्वी २२. जल २३. तेज २४. वायु २५. आकाश

उक्त पच्चीस तत्त्वों में से मूलप्रकृति को अव्यक्त कहते है ज्ञ अथवा चेतन को पुरुष कहते हैं। और इन दोनों से जो अवशिष्ट रहे वे सब व्यक्त है। ये पच्चीस तत्त्व ही प्रमेय कहलाते हैं। इन प्रमेयों का ज्ञान प्रस्तुत शास्त्र में प्रत्यक्ष, अनुमान और आगम प्रमाणों से होता है इन्हीं तीन प्रमाणो में अन्यान्य दार्शनिकों के सम्मत उपमान, अर्थापति, अभाव, संभव ऐतिह्य आदि प्रमाणो का भी अन्तर्भाव हो जाता है।

महाभारत तथा अन्य पुराणों में सांख्यशास्त्र का सम्पूर्ण प्रतिबिम्ब ही लक्षित होता है। महाभारत के वनपर्व (२०९, १६-२१) में महाभूत, व्यक्ताऽव्यक्त रूप के चतुर्विंशतितत्त्व तथा (२११,४) गुणत्रय का लक्षण उपलब्ध होता है। उसी तरह शान्तिपर्व (२८५,३३-४०) में प्रकृति, पुरुष के भेद का सविस्तार प्रतिपादन किया गया है।

सांख्यदर्शन की स्मृतिमूलकता व याज्ञवल्क्यस्मृति

सांख्यीय तत्त्वों के उल्लेख जैसे श्रुतियों में उपलब्ध होते हैं वैसे ही स्मृतियों में भी पाये जाते हैं। मनुस्मृति में सांख्य शब्द का उल्लेख न रहने पर भी सत्त्व, रज तम का सविस्तार वर्णन है। मनुस्मृति प्रथमाध्याय के ७६ वे श्लोक में

"आकाशात्तु विकुर्वाणात् सर्वगन्धवहः शुचि" –
मनुस्मृति अध्याय १.७६

की व्याख्या सांख्यसिध्दान्त के अस्तित्व को सूचित करता है। इसी प्रकार विष्णुस्मृति, शंखस्मृति तथा याज्ञवल्क्यस्मृति में भी सांख्यीय तत्त्वों का उल्लेख उपलब्ध होता है।

स्मृति साहित्य में मनुस्मृति के बाद दूसरी महत्तपूर्ण स्मृति है याज्ञवल्क्य स्मृति। कुछ दृष्टि से तो याज्ञल्क्यस्मृति का मनुस्मृति की अपेक्षा भी अधिक व्यावहारिक महत्व है। इसमें विषयवस्तु का विधिवत् विभाजन किया गया है। गणेश और ग्रहों की पूजा भी इस स्मृति की विशेषता है। याज्ञवल्क्य स्मृति मनु स्मृति के बाद की रचना है और अपेक्षाकृत छोटी है। मनुस्मृति में २७०० श्लोक है जबकि याज्ञल्क्य स्मृति में लगभग १००० श्लोक हैं। याज्ञवल्क्य स्मृति को हम ई. पू. पहली शताब्दी तथा ईसा के बाद की तीसरी शताब्दी के बीच रख सकते है। यह स्मृति लगभग समान विस्तार के तीन अध्यायों में विभक्त है। पहला आचाराध्याय दूसरा व्यवहाराध्याय और तीसरा प्रायश्चिताध्याय । याज्ञवल्क्य स्मृति पर मुख्य रूप से चार टीकाकारों की टीकायें उपलब्ध होती है। वे हैं- विश्वरूप की बालक्रीडा, विज्ञानेश्वर की मिताक्षरा अपरादित्य की टीका और चौथी शूलपाणी की दीपकलिका ।

याज्ञवल्क्य स्मृति का संबंध याज्ञवल्क्य ऋषि से है। वैदिक ऋषियों की परंपरा में याज्ञवल्क्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है, जिसके अनुसार याज्ञवल्क्य मुख्यता शुक्लयजुर्वेद और शतपयब्राह्मण के द्रष्टा है। शतपथब्राह्मण में भी याज्ञवल्क्य के विचारों को मान्यता दी गई है। याज्ञवल्क्य स्मृति और सांख्य

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 3, Issue 6, Nov.-Dec., 2023, pp: 631-635 www.ijhssm.org

तत्वों का अच्छेद्य संबध है। इस स्मृति के अनुसार वेदशास्त्रों में (वेदान्त के अर्थ और पातंजल आदि योगशास्त्रों में) विवेक उनमें प्रतिपादित ध्यान, कर्म का अनुष्ठान सत्यंगति प्रिय एवं हितकर वचन स्त्रियों के दर्शन एवं स्पर्श का परित्याग सभी प्रणियोंपर अपनी समान दृष्टि (समदर्शिता) परिग्रह (पुत्र, पत्नी आदि का) परित्याग, जीर्ण काषाय वस्त्र का प्रयोग, शब्द, स्पर्श आदि विषयों से इन्द्रियों की प्रवृत्ति का निरोध, तन्द्रा (नींद के बाद की स्थिति और आलस्य उत्साहहीनता) का त्याग, शरीर की अपवित्रता आदि दोषों का अन्वेषण, सभी पाप शमन आदि प्रवृत्तियों में (सूक्ष्म प्राणियों का वध होने से) पाप देखना रजोगुण एवं तमोगुण का परित्याग (प्राणायाम आदि द्वारा) भाव की शुध्दि, निःस्पृहता (विषयों और अन्तःकरण का संयम) इन उपायों द्वारा सम्यक रूप से शुध्द और केवल सत्त्वगुण सम्पन्न व्यक्ति ही मुक्ति प्राप्त करता है।

आत्मा नाम के तत्व का सदा स्मरण करने, आत्मा में निश्चल होकर ध्यान लगाने, केवल सत्त्व गुण के योग से कर्म रूपी बीज के नष्ट होने से और सत्पुरुषों के संयोग से आत्मयोग प्राप्त होता है। शरीर त्याग के समय जिस अविप्लुतमति (अहंकार आदि से जिसकी बुध्दि मलिन नहीं है) योगी का मन सत्व गुण से मुक्त होकर सम्यक रूप से केवल ईश्वर में लगा होता है, यह यदि आत्मा का साक्षात्कार नहीं कर पाता तो भी उसे पिछले जनम में अनुभूत दुःखो की स्मृति रहती है जिससे वह मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रवृत्त होता है। जैसा कि याज्ञवल्क्यस्मृति में प्रायश्चित अध्याय के श्लोक संख्या १६१ में से स्पष्ट हो जव्यक्ति

"शरीरसंक्षये यस्यमनः सत्वस्थमीश्वरम् ।
अविप्लुमतिः सम्यक्स जातिस्मतानियात्
।।" – याज्ञवल्क्यस्मृति प्रायश्चिताध्याय १६१

जिस प्रकार नट (नाटक खेलने वाला) उनके रंगो से अपने शरीर को रंग लेता है उसी प्रकार आत्मा भी अपने कर्मों का फल भोगने के अनेक रूपों वाले शरीर को धारण करती है। हृदय में दीपक के रूप में स्थित जीव की अनन्त रश्मियां (सुख-दुःख) की हेयुभूत नाड़ियाँ श्वेत कृष्ण, कबरी, कपिला नीली और लाल वर्ण की होती है। उनमें एक नाड़ी ऊपर की ओर स्थित है। जो सूर्यमण्डल को भेदकर ब्रहमलोक के भी पार पहुँचती है, इसके द्वारा ही जीव परमगति प्राप्त करता है।

याज्ञवल्वयस्मृति में वर्णन है कि वेद, शास्त्र, अनुभव, जन्म, मृत्यु (जन्मान्तर के कर्मो का फल भोगना निश्चत होने से) पीडा, गति, अगति (न चलना) सत्य असत्य, श्रेय (हितप्राप्ति) सुख और दुःख शुभ और अशुभ उनके संयोग से उत्पन्न फल तारा और नक्षत्रों की गति, आकाश, वायु, ज्योति (सूर्य) जल, पृथ्वी मन्वंतर की प्राप्ति, युग का परिवर्तन, मंत्रों एवं औषधियों का फल इन सबसे (देह से परे) आत्मा का अस्तित्व सिध्द होता है जो सर्वगामी और ईश्वर है।

इसी प्रकार बुध्दि अपने शब्द आदि विषयों सहित श्रोत आदि इन्द्रियां, मन, कर्मेंद्रियां, अहंकार बुध्दि पंचमहाभूत, व्यक्त (प्रवृत्ति) ये सब जिसके क्षेत्र है वह ईश्वर है। सभी प्राणियों में स्थिर सद असद् रूप आत्मा क्षेत्रज्ञ कहलाता है। ज्ञानेन्द्रियों के विषय में याज्ञवल्वय स्मृति के तीसरे अध्याय (प्रायश्चित अध्याय, यतिधर्मप्रकरण) मे श्लोक संख्या ९१ पूर्ण रुपेण सांख्यीय तत्त्व ही है -:

गन्धरूपरसस्पर्शशब्दरच विषयाः स्मृताः ।
नासिका लोचने जिह्य त्वक् श्रोत्रं चेन्द्रियाणि च ।। -
याज्ञवल्क्यस्मृति ३.९१

और श्लोक संख्या ९२ कर्मेन्द्रियों के विषय में प्रकाश डालता है:-

हस्तौ पायुरूपस्थं च जिह्वा पादौ च पञ्च वै।
कर्मेन्द्रिया जानीयान्मनश्चैवोभयात्कम् ।। -
याज्ञवल्क्यस्मृति ३.९२

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 3, Issue 6, Nov.-Dec., 2023, pp: 631-635 www.ijhssm.org

तत्त्वों के आधार पर सांख्य दर्शन में जिन पच्चीस तत्त्वों का वर्णन किया गया है याज्ञवल्वय स्मृति में भी उन्हीं तत्त्वों को आधार मानकर मोक्ष प्राप्ति की जा सकती है और गृहस्थ जीवन में रहकर भी हम धर्म का पालन करके कैवल्य (मुक्ति) पा सकते है। इस प्रकार सांख्य दर्शन और याज्ञवल्वय स्मृति के तत्त्वों के विवेचन से आत्म तत्त्व विवेचना सिध्द हो जाती है।

Assistant Professor,
Department of Sanskrit,
S.N.D.T. Women University,
Charchgate, Mumbai – 400 020.
(M.H.)

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गौड डॉ. शशिबाला, दर्शन शास्त्र का इतिहास, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी ।
2. शर्मा, डॉ. उमाशंकर, सर्व दर्शन संग्रह, चौखम्बा प्रकाशन ।
3. मिश्र वाचस्पति, सांख्य तत्व कौमुदी, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी ।
4. उपाध्याय, पं. बलदेव, भारतीय धर्म दर्शन, चौखम्बा प्रकाशन वराणसी ।
5. महाभारत (शान्ति पर्व) गीता प्रेस गोरखपुर ।
6. महाभारत (वन पर्व) गीता प्रेस गोरखपुर ।
7. कालिदासकृत, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, नाग पब्लिशर्स दिल्ली ।
8. पाण्डेय, उमेशचन्द्र, याज्ञवल्क्य स्मृति, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी ।
9. भट्ट कुल्लूक, मनुस्मृति, टीका, मुंबई- १९४६
10. त्रिपाठी, श्रीकृष्णमणि, सांख्याकारिका, चौरवम्बा सुरभारती, वाराणसी ।